अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

असमिया लोकनाट्य : एक समीक्षात्मक अध्ययन

श्रीमती जोनटि दुवरा
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
गोलाघाट वाणिज्य महाविद्यालय, ज्योति नगर
गोलाघाट (असम) - 785621
मो. - 9854129483 / 94350-54555

असमिया संस्कृति मुज़्यतः आर्य संस्कृति-भारतीय संस्कृति है। इस संस्कृति के निर्माण में आर्यतर जातियों का अपूर्व योगदान है, जिनमें आष्ट्रिक, द्रविड़ और तिब्बती-धर्मी जातियों विशेष महत्व की अधिकारिणी है। किसी जाति की लोक-संस्कृति का स्वरुप उसके लोक-साहित्य में उभर आता है। जनमानस के विश्वास, संस्कार, परज़ंराएँ, चिन्तन - प्रक्रियाएँ लोक-साहित्य के माध्यम से सस्वर हो उठती है। असमिया लोक-साहित्य असम के जन-जीवन की सांस्कृतिक झाँकी है। आज भी असम के विभिन्न सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक प्रथाएँ पूर्ववत हैं। जिनकी समुचित झलक हमें इसके लोक साहित्य में मिलती है।

अध्ययन की सुविधा के लिए समस्त लोक-साहित्य को निज़्नांकित विधायों में विभाजित किया गया है -

(1) लोक-गीत (2) लोक -गाथा (3) लोक - कथा
(4) लोक - नाट्य (5) प्रकीर्ण साहित्य (6) मंत्र साहित्य।

यहाँ हम 'लोक-नाट्य' पर चर्चा करेगें :

लोक साहित्य के पद्य और गद्य के विविध विधायों में "लोक नाट्य" एक महत्वपूर्ण विधा है, जिसमें कथोपकथन के माध्यम से एक कथावृत्त को उपस्थित किया जाता है। यह जनसमूह की कृति है। लोक-मानस की तृप्ति हेतु कथावृत्त को अभिव्यक्त करने के लिए इसमें संगीत, नृत्य, अभिनय, वेशभूषा, विभिन्न वाद्यों इत्यादि का अपूर्व संयोग होता है। दर्शन तथा श्रवण के द्वारा जनजीवन को आह्लादित तथा अनुप्राणित करनेवाली यह एक उत्तम विधा है। प्राचीन काल से आज तक यह ग्रामीण जीवन का अमूल्य धरोहर सा बना है।

डां श्याम परमार के अनुसार - 'लोक-नाट्य से तात्पर्य नाटक के उस रुप से है, जिसका सज़्बन्ध विशिष्ट शिक्षित समाज से भिन्न सर्व-साधारण के जीवन से ही हो और जो परज़्परा से अपने अपने क्षेत्र के जन-समुदाय के मनोरंजन का साधन रहा हो।'

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

लोक-नाट्य की परम्परा अत्यन्त प्राचीन है। नाटक को भारतवर्ष में पंचम वेद के रूप में स्वीकार किया गया है। ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी में ही भरतमुनि के नाट्य-शास्त्र में इस विधा की आलोचना हुई है। इससे स्पष्ट होता है इसके पूर्व ही लोक-जीवन में नाटक का प्रचलन हो चला था जिसके आधार पर भरतमुनि ने विश्लेषण करने की सुविधा प्राप्त की। संभवतः प्रथमावस्था में यह मौखिक रुप में ही रहा होगा। बाद में वेदों में 'यम-यमी' के संवाद में इसका लिखित रुप प्राप्त होता है। इसके प्राचीन पद्यमय रुप में गद्य का भी संमिश्रण होता रहा होगा जो जन-जीवन के साथ एक रस हो गया होगा।

विभिन्न प्रवृत्तियों के आधार पर लोक-नाट्यों के कई प्रकार के वर्गीकरण उपलब्ध होते हैं। प्रवृत्ति के आधार पर **डा. सत्येन्द्र नाथ शर्मा** जी (असमिया साहित्य के साहित्यकार) ने निमांकित वर्गीकरण किया है -

(क) नृत्य-प्रधान
(ख) नाट्य-हास्य प्रधान
(ग) संगीत प्रधान कथाबद्ध
(घ) नाट्य-वार्ता प्रधान

ऐसे अनेक लोक-नाट्य है, जिसमें यह निर्धारण करना कठिन होता है कि कौन-सा तत्व प्रधान है। इस दृष्टि से डा. सत्येन्द्र का वर्गीकरण हर प्रादेशिक लोक-नाट्य के लिए मान्य नहीं हो सकता।

डा. राम शर्मा ने भारत के सभी जनपदों को दृष्टि में रखकर तीन प्रकार के लोक-नाट्यों का उल्लेख किया है -

(क) नृत्य-प्रधान लोक-नाट्य
(ख) संगीत-प्रधान लोक-नाट्य
(ग) स्वाँग-प्रधान लोक-नाट्य

भारतवर्ष के अन्य जनपदों में प्राप्त सारे लोक-नाट्यों को इस वर्गीकरण में कहाँ तक सफलतापूर्वक रखा जा सकता है, यहाँ यह विचारणीय नहीं है। हम केवल असमिया लोक-नाट्यों के संदर्भ में यह कहना चाहेंगे कि डां राम शर्मा ने असमिया लोक-नाट्य 'अंकिया' को इस आलोचना के लिए चुना है। उन्होंने 'अंकिया' को नृत्य-प्रधान लोक - नाट्यों में रखा है। सही तौर पर विचार किया जाय तो 'अंकिया' में संगीत तत्व तथा वार्ता-प्रधान अभिनय की प्रधानता है, नृत्य की नहीं।

असमिया लोक-नाट्यो का वर्गीकरण आज तक किसी असमिया आलोचकों ने वहीं किया हैं। यद्यपि लोक-नाट्यों के विभिन्न उपकरणों पर पृथक-पृथक रुप में आलोचनाएँ हुई हैं, परन्तु उन्हें समेटकर वर्गीकृत करने का प्रयास अभी तक नहीं किया गया है। असमिया लोक-साहित्य विषयक

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

प्रकाशित ग्रन्थों में भी एतद्विषयक चर्चा नहीं मिलती हैं। केवल **डा. वीरेन्द्र नाथ दत्त** जी ने "**गोवालपारार लोक-नाट्य**" नामक निबन्ध और **द्विजेन नाथ** जी ने "**गोवारपरीया लोक-गीतत लोक-नाट्य**" नामक निबन्ध में इस विषय में किंचित चर्चा की है।

आखिर असमिया लोक-नाट्य का वर्गीकरण किस आधार पर किया जाए? इसका आयाम इतना विस्तृत है कि उसे डा. सत्येन्द्रजी या डा. शर्मा जी के वर्गीकरण में पूर्णतः समाविष्ट नहीं किया जा सकता है। जिसे संगीत-प्रधान लोक-नाट्य में रखने की कोशिश होगी उसमें नृत्य और अभिनय को भी प्रचुरता मिलती है। अंत में असमिया लोक-नाट्यों के विकास - क्रम तथा मूल - प्रवृतियों को ध्यान में रखते गुए उनका वर्गीकरण बहुत कुछ निमांकित ढंग से किया जाना ही अधिक व्यवहारिक होगा -

असमिया लोक-नाट्य

अर्द्ध नाट्य गीति - नृत्य नाट्य स्त्री - प्रधान नाट्य यात्रा या गान अंकिया तथा झुमुरा

आगे इनका संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया जाया है :

(१) अर्द्ध - नाट्य :

अर्द्ध-नाट्य के अन्तर्गत 'भावरिया', 'बहुवा', 'मेढक - व्याह', 'चड़क-नाट्य', 'सोनाराम - नाट्य', 'पुतली - नृत्य' आदि असमिया नाट्य समाविष्ट किये जा सकते है। लोक - नाट्य का प्रारंभिक रुप होने के कारण इनमें लोक-नाट्यों की सारी विशेषताएँ प्राप्त नहीं होती है। परन्तु सामान्य जनजीवन का मनोरंजन करना ही इसका उद्देश्य है।

(क) भावरिया या स्वाँग : 'भावरिया' का अर्थ है नकल करना, ढोंग-रचना। जो व्यक्ति विविध भाव-भंगिमा या हास्य उत्पादन और मधुर बातों के द्वारा जन-समुदाय को आनंदित करता है उसके नाम के साथ 'भावरिया' विशेषण का प्रयोग होता है। निनि (चूहा) भावरिया, कामोराम भावरिया, सज्बोरा भावरिया, भोला-भावरिया, पुवाना भावरिया, लर्फा भावरिया आदि इस जनपद के ऐसे प्रसिद्ध व्यक्ति थे, जो विभिन्न प्रकार से स्वाँग रचकर जन-मानस को आनन्द प्रदान किया करते थे।

(ख) बदुवा या बहुरुपिया : 'बहुवा' का अर्थ है कौतुक करनेवाला। विभिन्न प्रकार के हास्योत्पादक रुप और साज सज्जा धारण कर बहुवा या बहुरुपिये जन-समुदाय को आनन्द प्रदान किया करते हैं।

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

(ग) मेंढक - व्याह : 'भेकुलि - भिया' (मेंढक-व्याह) नामक स्वांग-कृपिजीवी असमिया ग्रामीणों के बाच अत्यन्त प्रिय अनुष्ठान है। चैत-वैसाव महीने में खेतों की जुताई हो जाने के बाद यदि कई दिनों तक वर्षा नहीं होती है तो ग्रामवासी यह स्वांग करते है। इसके लिए वे एक नर तथा एक मादा मेंढक को पकड़कर सामान्य स्त्री-पुरुष के विवाहानुसार 'विवाह' रचाते है। इसमें होम-यज्ञ आदि पूरे विधि-विधान का पालन किया जाता है। शंखध्वनि के साथ कृषक-महिलाएँ मांगलिक गीत गाती हे। गीत में इन्द्रदेव, मेघ आदि के प्रति स्तुतियाँ रहती हैं, यथा -

राम राम भेकुलिर बियालै
आहे इन्द्रदेवे
बताह बरषुणत तिति है
स्वर्गर अपेश्वरी
नानि आहिछे
भेकुलीर बिया शुनि हे। (इत्यादि)

- असम के 'भेकुलि बिया' नामक स्वाँग में जो नाट्य-धर्मिता है, उसके आधार पर इसे लोक-नाट्य ही कहा जाएगा। इसमें मनोरंजन के साथ जन-कल्याण की भावना भी निहित है।

(घ) चड़क - नाद्य : इस प्रकार का नाट्य चड़क-पूजा के अवसर पर किया जाता है। चड़क - पूजा का सज़्बन्ध शिव से है, यद्यपि इसका प्रारंभिक सज़र्क सूर्य पूजा के साथ रहा है। इस नाट्य में चण्डी नृत्य होता है। चण्डी (काली) का मुखौटा पहनकर हाथ में खड़ग लेकर चारों ओर घुम-घुमकर यह नृत्य किया जाता है। साधारणतः निःशब्द रात में किये जानेवाले इस नाट्य में महादेव तथा उनके चरों के समवेत नृत्यों का भी संयोग होता है। इस नाट्य में व्यंग्य सा छोटा सा अवसर भी होता है, जिससे दर्शक को आनन्द प्राप्त होता है।

(ङ) सोनाराम नाट्य : व्यक्ति जब भयग्रस्त होता है तब देव-देवी की कल्पना कर उसकी पूजा करता है। आदिम मानव में इस प्रकार की प्रवृत्ति अधिक दिखायी पड़ती है। इस नाट्य में 'सोनाराय' को बाध-देवता के रुप में स्वीकार किया है एवं उसकी तुष्टि हेतु आदमी संगीत नृत्य तथा स्तुति के साथ नाट्याभिनय करता है। यह बड़ा ही प्राथमिक स्तर का लोक-नाट्य है।

(च) पुतली नृत्य : यह बड़ा ही प्राचीन अर्द्ध-नाट्य है। पुतली-नृत्य का अनुष्ठान केवल रात में ही होता है। पुतलियाँ विभिन्न प्रकार का अभिनय करती है। रामायण, महाभारत के अतिरिक्त विभिन्न सामाजिक कथायों के आधार पर भी इन पुतलियों के माध्यम से अभिनय करवाये जाते है। इन नाट्यानुष्ठानों में विभिन्न प्रकार के वाद्यों के प्रयोग होते हैं। सूत्रधार के अपूर्व कौशल से ये निर्जीव पुतलियाँ इस प्रकार की भाव-भंगिमा या कला-कौशल दिखाती है कि मानों वे पूर्णतः सजीव हो। किसी

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

पर्व, त्योहार, सामाजिक अनुष्ठान आदि में पुतली-नृत्य का आयोजन आज भी असम जनपद में अधिक लोकप्रिय हैं।

(२) गीति-नृत्य नाट्य :

असम में प्रचलित 'ओजापालि', 'दुलीया', 'जयढुलीया' आदि में संगीत और नृत्य की प्रधानता है। संलाप भी प्रायः गीत में ही होते हैं। बीच-बीच में हास्य-व्यंग का पुट भी होता है। धार्मिक अनुष्ठान, उस्तव-पर्व आदि के अवसर पर मनोरंजनार्थ आज भी 'ओजापालि', 'ढुलीया' आदि लोक-नाट्यों के प्रदर्शन होते हैं। असम के प्राचीन राजदरबारों में भी इन लोक-नाट्यों का महत्व था। इन्हें राज्य संरक्षण भी प्राप्त होता था।

(क) ओजापालि : 'ओजापालि' शब्द 'ओजा' और 'पालि' दो शब्दों से बना है। 'ओजा' का अर्थ है निपुण, पारंगत-इसमें दलपति या सूत्रधार को 'ओजा' कहा जाता है। 'ओजा' के साथ संगत करने के लिए छह-सात संगी होते हैं, जिनको 'पालि' नाम से अभिहित किया जाता है। मनसा कीर्तन करनेवाले ओजपालि का अनुष्ठान मनसा पूजा के अवसर पर होता है। मनसा-वन्दन के अनेक प्रकार के गीत हैं, जिनका ओजापालि के प्रारंभ में बैठकर और धीरे धीरे कथा बढ़ने पर रस-संसार हेतु विविध नृत्य के साथ गायन किया जाता है। इसमें खैजड़ी, खोल, ढोल आदि मुज़्य वाद्य होते हैं। हस्त-मुद्रा, गीत तथा ताल और नृत्य में बंधा हुआ यह लोक-नाट्य असम में बड़ा लोकप्रिय है।

(ख) ढुलीया : असम के प्राचीन लोक नाट्यो में ढुलीया का महत्वपूर्ण स्थान है। ढोल या ढोलक ही इस नाट्य का मूल आधार है। इसीलिए इस का नाम 'ढुलीया' (ढोल बजानेवाला) पड़ा है। एक दल में छह-सात से लेकर बीस-पचीस तक 'ढुलीया' होते हैं। ढोल की विभिन्न बोल पर संगत करने के साथ साथ नृत्य तथा अभिनय इस नाद्य का अपरिहार्य अंग है।

वस्तुतः इस लोक-नाद्य का कोई लिखित रुप नहीं मिलता है। पौराणिक कथा या रामायण-महाभारत के आधार पर ही 'ढुलीया' नाट्याभिनय करते हैं। सीता-हरण, रावण-वध, दुर्योधन का उरु-भंग, जयद्रथ वध, कर्ण-वध, रुकिमणी-हरण आदि विविध कथाएँ इसमें अभिनीत होती है।

(ग) जय ढुलीया : यह लोक-नाद्य 'ढुलीया' का ही समपर्याय है। इसमें केवल आंचलिकता का थोड़ा-बहुत प्रभाव रहा करता है। ढुलीया नाट्यानुष्ठान की तरह ही इसमें भी संगीत, वाद्य तथा अभिनय का एकत्र संगम होता है।

(घ) खारा - पुराण : खारा - पुराण अर्थात खड़े होकर कहानी या नाट्य-कथा को प्रदर्शन करने के कारण इस लोक-नाट्य का नाम 'खारा-पुराण' पड़ा हैं। इसमें सूत्रधार, दीवारी, वायन, वंशी-वादक और संगीवृन्द खड़े होकर गीत के माध्यम से कथा वाचन करते हैं।

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

(३) स्त्री प्रधान नाट्य :

असम में कई प्रकार के ऐसे भी नाट्य-रूप हैं जो विभिन्न अनुष्ठानों पर केवल स्त्रियों के द्वारा ही संचालित, अभिनीत एवं-स्त्रियों के मध्य ही प्रदर्शित होते हैं। इसलिए , आनुष्ठानिक नाट्य होने पर भी इन्हें स्त्री-प्रधान नाट्य या स्त्री-नाट्य ही माना जाएगा। 'पचति', 'आपी-ओजा', 'नाम - भाओना', 'हुदुम -नृत्य-नाट्य', 'कीर्तिकिय नृत्य - नाट्य' आदि इसी प्रकार के स्त्री-नाट्य हैं।

(क) पचति : यह लोक-नाट्य श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर अभिनीत होता है। महापुरुष शंकरदेव एवं माधवदेव द्वारा प्रचारित कृष्ण-भक्ति के कारण असमिया लोक-मानस में श्रीकृष्ण का अचूक प्रभाव है। श्रीकृष्ण के जन्म के पाँचदिन बीत जाने के बाद यह अनुष्ठान होता है।

'पचति' मुज़्यत: दिवा उत्सव है। यह उत्सव दिन में सुबह और शाम दोनों समय आयोजित होने के कारण इसके वैसे ही दो विभाग किये जाते है।

(ख) आपी ओपा : 'आपी' का अर्थ है लड़की। इस लोक-नाट्य में केवल महिलाएँ भाग लेती है। सज़्पूर्ण नाट्य मंडली में एक लड़की या महिला 'ओजा' बनती है और नाट्य का परिचालन करती है। इसमें रामायण, महाभारत, पुराण आदि की कथाओं को गीत, नृत्य और अभिनय के द्वारा प्रदर्शित किया जाता है। इसके लिए विशेष रंगमंच की आवश्यकता नहीं होती।

(ग) नाम भाओना : यह महिलाओं द्वारा संचालित एक प्रकार का लोक-नाट्य हैं जिसमें भागवत के आधार पर श्रीकृष्ण-विषयक विभिन्न कथाओँ का महिलाओं द्वारा एक मण्डल बनाकर गायन होता है। इसमें एक सूत्र धारिणी रहती है। उसके निर्देशानुसार ही दूसरी महिलाएँ विभिन्न भाव-भंगिमाएँ गायन के अनुरूप प्रदर्शित करती हैं। विभिन्न उत्सवों पर आयोजित होनेवाले इस स्त्री लोक-नाट्य में करताल, ताल, नागाड़ा आदि का व्यवहार होता है।

(घ) हुदुम नृत्य-नाट्य : 'हुदु' का अर्थ है उल्लु की तरह का विशेष पक्षी। यह नृत्य-नाट्य खेती और वर्षा से सज़्बन्धित है। लोक विश्वास है कि अनावृष्टि के समय इस लोक-नाट्य के आयोजन से वृष्टि होती है तथा कृष्टि अच्छी होती है। इसमें कर्षण और प्रजनन की मूल भावना अन्तर्हित है।

(ङ) कार्तिकिय नृत्य-नाट्य : कार्तिक देवता की पूजा धर्मीय दृष्टिकोण से ही लोक-मानस में आज संरक्षित है। उक्त देवता को शस्य के साथ पुत्र संतान-दाता के रुप में स्वीकार किया जाता है। अत: इसमें स्त्रियों का महत्व होना जरुरी है। यह केवल स्त्रियों तक ही सीमित है, पुरुषों के लिए निषिद्ध है।

(४) यात्रा या गान :

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

असम में 'यात्रा' या 'गान' नामक भी एक प्रकार का लोक-नाट्य है। 'यात्रा' और 'गान' शब्द नाट्य के लिए कब से प्रचलित हुआ, इस विषय में कुछ भी कहना केवल अनुमान करना ही होगा। कभी-कभी 'यात्रा गान' शब्द लोक-नाट्य के लिए एक ही साथ व्यवहृत होता है। प्राचीन असमिया लोक-नाट्य के लिए एक ही साथ व्यवहृत होता है। प्राचीन असमिया साहित्य में 'श्री कृष्ण की दौल-यात्रा', 'रथ-यात्रा', 'घुनचा यात्रा' आदि शब्द मिलते हैं जो नाट्य के अर्थ में प्रयुक्त होने के बजाय मात्र उत्सव के द्योतक है।

आगे कतिपय यात्राओं का उल्लेख किया जाता है :

चिह्न यात्र : 'चरित बुथि'१६ के अनुसार शंकरदेव (१४४९-१५६३ ई.) ने 'चिह्नयात्रा' अभिनीत किया है। शीर्षक से ही पता चलता है कि यह चिह्न का यित्रों के साथ होनेवाली यात्रा थी। शंकरदेव ने अपने सगे-सज़्बन्धियों के अनुरोध पर श्रीमदभागवद के दशम स्कन्ध पर आधारित वैकुण्ठ के चित्र अंकित किये थे और उस चित्रों का संगीत, वाद्य तथा नृत्य के साथ उपस्थित किया था।

विविध यात्राएँ : शंकरोत्तर युग में अनेक नाट्यकारों की विविध यात्राएँ उपलब्ध होती है। ये प्रायः रामायण, महाभारत, भागवत तथा पुराणों की कथा पर आधारित है। ग्रामीण लोक-मानस की तृप्ति तथा उनमें भक्ति की भावना जमाने के हेतु ही यह नाट्य रुप संभवतः अधिक लोकप्रिय हुआ था। इसका प्रचलन आज भी है। कतिपय उल्लेखनीय यात्राएँ है :

१. दैत्यारी ठाकुर - 'नृसिंह - यात्रा'
२. गोपाल-आता - 'जन्म यात्रा' 'बोका-यात्रा'
३. रतिकान्त - 'प्रलज़्ब विद्यान-यात्रा'
४. शंभुनाथ - 'श्रीकृष्णर विजय यात्रा' ---- इत्यादि।

विविध गान : 'भोरी गान', 'दोतारा गान', 'वंशी पुराण गान' आदि ऐसे अनेक लोक-नाट्य हैं जो विभिन्न उत्सवों या सामाजिक मेलों आदि में खेले जाते हैं।

भारी-गान : रामायण-महाभारत की कथाओँ के आधार पर 'भारी-गान' अभिनीत होता है। 'सीता-हरण', 'रावण-वध', 'दधि-मथन' आदि की कथाएँ अभिनय के विषय होते हैं।

दोतारा-गान : दोतारा-गान को 'केच्छा वन्दी' भी कही जाती है। 'केच्छा' शब्द कदाचित उर्दु 'किस्सा' शब्द का ही विकृत रुप है। इसमें पौराणिक कथा ही नहीं वल्कि 'मदन कुमार', 'चन्द्रावली', 'धर्मीराजा अरण बादशाह' आदि लौकिक अनप्रिय कथा को भी अभिनय का विषय बनाया जाता है।

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

वंशीपुराण गान : वंशीपुराण का गान बेदुला-लखीन्दर की कथा के आधार पर अभिनय किये जानेवाला नाट्य है। गीत, नृत्य, संलाप अभिनय से पुष्ट इस लोक-नाट्य की परज़रा अति प्राचीन है। इसका संबंन्ध 'नाग-पूजा' एवं 'मनसा-पूजा' से है।

(५) अंकिया तथा झुमुरा :

'अंकिया' तथा 'झुमुरा' असमिया लोक-नाट्यों की विशिष्ट विधा है। मध्यकालीन असम में वैष्णव आन्दोलन को व्यापक बनाने के लिए को विशिष्ट प्रकार के एक अंक का नाट्य रचा गया, उसे 'अंकिया' या 'अंकिया भाओना' कहा जाता है। डां सत्येन्द्र नाथ शर्मा ने 'झुमुरा' के विषय में लिखा है - ''कदाचित पूर्णाग कथावस्तु के बजाय जब सामान्य घटना या परिस्थिति को लेकर संकुचित परिसर में नाट रचा जाता है, तब उस प्रकार के नाट को झुमुरा कहा जाता है।'' 'कालिदमन', 'पत्नीप्रसाद', 'केलि-गोपाल', 'रुक्मिणी हरण', 'पारिजात-हरण' आदि माधवदेव विरचित झुमुराएँ हैं।

असमिया लोक-नाट्यों का रास्त्रीय अध्ययन करना हमारा अभिप्राय नहीं है। यहाँ केवल असम के विविध लोक-नाट्यों का संकेत मात्र करना ही अलम था। अब हम लोक-नाट्यों की कतिपय विशेषताओं का रेखांकन करना चाहेगें :

(१) लोक-नाट्य जन-मानस या समुदाय की वस्तु ही। इसलिए इसमें दर्शकों के साथ नाट्य मंडली का एक सहज सज़र्क कायम रहता है।

(२) लोक नाट्य का मूल उद्देश्य मनोरंजन है। अतः इसमें गीत तथा नृन्य का प्राध्यान्य होता है।

(३) असमिया लोक-नाट्यों में अंक-विभाजन नहीं होता है। एक के वाद दूसरे दृश्य का ताँता बंधा रहता है।

(४) असमिया लोक-नाट्य अनेक रुप है। इनमें पौराणिक, धार्मिक, ऐतिहासिक, लैकिक आदि विविध कथाएँ प्रदर्शित की जाती है।

(५) अभिनय विभिन्न प्रकार के होते हैं - मूकाभिनय, प्रतीकात्मक, अभिनय, हाव-भाव युक्त तथा वार्ता प्रधान। विभिन्न संकेतों का प्रयोग भी इसकी एक विशेषता है।

(६) प्रवृत्ति विशेष या स,मुदाय विशेष के द्योतक पात्रों का समावेश भी किसी-किसी लोक-नाट्य में परिलक्षित होता है।

(७) असमिया लोक-नाट्यों में संलाप मुज़्यतः पद्यों में होते हैं।

(८) असमिया लोक-नाट्य के नृत्यों में ओजापालि, देयोधनी, ढुलीया, सत्रीया आदि नृत्यों के प्रर्याप्त प्रयोग होते है।

Volume 8, Issue1, (January-March 2020)
Impact Factor: 5.659 [ISSN: 2348 - 2605]
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका

(९) लोक नाट्यों में 'सूत्रधार', 'औजा', 'मूल' अथवा निदर्शक की भूमिका सर्वप्रमुख होती है।

(१०) साधारणत : लोक-नाट्य मंगल-सुचक (अंकिया में 'मंगल-भटिमा') गीत तथा दर्शकों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करते हुए प्रारंभ होता है।

(११) सामान्यत : लोक-नाट्यों में गायन-बायन का विशिष्ट स्थान होता है।

(१२) स्त्री-नाट्यों में सञ्पूर्ण अभिनय मात्र स्त्रियाँ ही करती है। दर्शक भी महिलाएँ ही होती है।

(१३) वेश-भूषा पात्रानुसार होता है। सूत्रधार, ओजा आदि के सिर पर विशिष्ट पाग होता है।

(१४) असमिया लोक-नाट्यों में स्मारक का अभाव होता है। पात्र अपने बुद्धि-चातुर्य या स्मरण शक्ति के आधार पर ही संलाप दोहराते है।

(१५) सिंहासन आदि आसनों के लिए ढोल, ऊखल, कठ आदि का व्यवहार किया जाता है।

(१६) अधिकांश लोक-नाट्य रात में ही होते हैं। अतः प्रकाश के लिए मशाल, दीपक आदि का व्यवहार किया जाता है।

असमिया लोकनाट्यों की कतिपय विशेषताओं पर दृष्टिपात करने के पश्चात यह कहा जाएगा कि इस जनपद के लोक-नाट्यों की एक परञ्परा कि इस जनपद के लोक-नाट्यों की एक परञ्परा रही है। लेकिन खेद का विषय है आज तक सञ्पूर्ण असमिया लोक-नाट्यों को खोजबीन नहीं हुई है। समुचित संरक्षण के अभाव में आज अनेक लोक-नाट्य मृतप्रायः भी हो रहे है। इस ओर अभी अध्येताओं अथवा बिद्वानों का भी समुचित ध्यान नहीं गया है। आज सबसे बड़ी आवश्यकता है इनके सञ्पूर्ण रुप का याज्य लेखा-जोखा प्रस्तुत करना। इसके अभाव में कहीं असम की लोक सञ्पत्ति नष्ट न हो जाए।

संदर्भ ग्रंथसूजी :

१. डां सत्येन्द्र नाथ शर्मा , लोक साहित्य विज्ञान।
२. डां कृष्णदेव उपाध्याय, लोक-साहित्य की भूमिका।
३. अतुलचन्द्र बरुवा, मनसा काव्य आरु ओजापालि।
४. डां हरिचन्द्र भट्टाचार्य, असमिया नाट्य साहित्यर जिलिङनि।
५. द्विजेन नाथ, गोपालपरीया लोक-साहित्यत दृष्टिपात।
६. इंटरनेट, वेवचाईड, पत्रिकाएँ आदि।